गिरमिट की कथा

GIRMIT KI KATHA

सफल जहाजियों की अजब दासतां

True story of an Indentured Family from Uttar Pradesh in India to the Fiji Islands- 1906 to 1995

Dr Ram Lakhan Prasad

सफल जहाजियों की अजब दास्तां

हमारे पूर्वजों की सच्ची कथा

डाक्टर राम लखन प्रसाद

यह हमारे आजा, सरजू और आजी गंगादेई की आत्म कथा है और आप इसे उन की रुदन या दुख भरी दासतां या राम कहानी ही समझे तो अच्छा होगा। वर्षों से जिस स्मृतियों को वे एक कंजूस की तरह लुका के अपने दिल और दिमाग मे रखे थे उस महान सम्पत्ति या खजाने को मैं ने बड़े हुनर से उन के मुखारबिन्द से निकलवा ही लिया था।

इस के लिये हमे उन की बहुत ही सेवा सत्कार करनी पड़ी थी और उन से अपने चोचले बोल चाल से दुलार दिखा कर सब सच्चाई को निकलवा लिया था। अपनी ये सभी दास्तां वे दोनो आहिस्ते आहिस्ते रुक रुक के समय पा कर हम को बताया था। यह सब करते हुये हम ने उन दोनो को रोते देखा था, हँसते देखा था और नाराज होते भी देखा था। अपने दुख भरी इतिहास को सुनाते समय वे कभी कभी इतने भाउक हो जाते थे की हम को उन के पास से उठ कर चले जाना ही ठीक होता था।

मुझे मेरे आजा आजी से इस लिये दस साल के उमर से ही लगाव हो गया था किऊंकि वे मुझ से हर शाम को तुलसीदास के राम चरित्र मानस की कुछ चौपाईयों और दोहों को बांचने को कहा करते थे। इसी बीच जब बिसरजन होता था तब वे अपनी गिरमिट की र्दनाक घटनाओं का उल्लेख बड़े विसतारपूर्वक हम से किया करते थे। मैं उन से कई सवाल किया करता था और वे सही जवाब देने में कभी हिचकिचाते नही थे।

एक बार हम ने अपने पागलपन में उन से एक बेढ़ंगा सवाल भी कर दिया था पर उन का जवाब मेरे और मेरे आजी के मन में भा गया था। "आजा जी, जब आप लोग फीजी पहुचें और तब अगर एक काईबीती स्त्री के साथ विवाह कर लेते तो आज हमारे सामने जो जमीन की समस्या है वह तो कुछ हद तक हल हो सकती थी।" यह स्वाल सुन कर मेरी आजी हंस पड़ी पर उन्हों ने कुछ कहा नहीं।

हां मेरे आजा को इस सवाल से कोई अचरज नही हुई और वे बोले, “ पहली बात तो यह है कि मेरी शादी तेरे आजी के साथ जहाज पर ही हो गई थी तो मैं दूसरी शादी नहीं कर सकता था । अगर कर भी लेता तो तेरी आजी मुझे और मेरी नई औरत की जान तो जरूर ले लेती । पर मान लो की मेरी शादी नही हुई होती तब भी मैं ऐसा नही कर सकता था किऊंकि उस समय के काईबीती लोग बड़े खतरनाक थे और वे सदा हम से दूर अपने कोरो में रहते थे ।

फिर एक और बात है जो तुम आज नही समझोगे और वह यह है की उस समय की आदिमनिवासियों की लड़कियां देखने में बड़ी मैली, बदसूरत और बुरी लगती थी । उन से शादी करने की बात तो दूर थी, हम उन के नज़दीक भी नही जा सकते थे । ” इतना कह कर आजा भी हंस पड़े थे और उस हंसने का मतलब मुझे आज समझ में आ रहा है ।

अब आप ही देखिये की मेरे आजा संस्कारी तो थे ही पर वे हाजीजवाबी भी थे। उन्हे सच्च बोलने से कोई नही रोक सकता था। इसलिये उन की सच्ची घटनाओं को मैं ने इस आत्म कथा में बयान करने का निशचय किया जिससे अन्य लोग यह जान जायें कि गिरमिट के दुख कितने दारुण थे फिर भी हमारे पूर्वजों ने सब कुछ सह कर हमारा भविष्य बना दिये थे।

जब दुनिया भर में विलायत के एक क्रातिकारी, विलियम विलबाफोस ने गुलामी की प्रथा का एकदम से अन्त करवाया था तब दुर्भाग्य से हिन्दुस्तान की बारी आ गई। बिलायत के सरकार के मदद से ओसदेश के एक जटिल व्यापारिक कम्पनी, जिसे सीयासार (सी एस आर) के नाम से जाना जाता था, ने अपना अधिकार फीजी के सरकार पर ड़ाला। वहां के सरकार को अपने प्रभुत्व से प्रभावित किया जिस से उन के गन्ने के खेतों में आदिम निवासिवों के स्थान पर भारतीयों के हुनर को काम में लाया जाये।

जैसे वे पुकार रहे थे “आओ जहाजी खेती करो !” क्योंकि यहां के काईबीती लोगों का आचार विचार गन्ने के खेती से मेल नही खाती है । काईबीती लोग उन दिनों खाओ, पिओ और जिओ में लगे रहते थे उन्हे कल की फिकर नहीं रहती थी ।

गुलामी तो दुनियां से उठ गई थी और ब्रिटिश सरकार इस दूषित प्रथा को फिर से नहीं ला सकती थी किऊंकि दुनियां उन पर थू थू करती इसलिये चालाकी से एक नये शर्तबन्दी प्रथा को प्रचलित किया गया जो एक शर्तबन्दी प्रथा थी जिसे इनड़ेनचर सिसटम या बाद मे गिरमिट के नाम से प्रसिद्ध हुआ । जहां गुलामी प्रथा में लोग जीवन भर के लिये बिक जाते थे वहीं हमारे पूर्वज पांच या दस साल के लिये धोखे धड़ी से सरासर बिकने लगे थे । इस गिरमिट की प्रथा के जरिये फीजी देश के लाखों बिगहे जमीन आबाद हुये और सीयसार कम्पनी एक पूंजीपती बनती चली गई पर उन दिनो के गिरमिटिये दुख सह कर बरबाद होते गये ।

इतिहास हमे बताती है कि यह शर्तबन्दी की प्रथा हिन्दुस्तान के खुद अपने देशद्रोहियों और नवाबों द्वारा विलायत के ईस्ट इंडिया कम्पनी के अमलदारो से मिल कर उन की चापलूसी कर के ही शुरू की गई थी । केवल फीजी ही मे नही पर इस से पहले अफ्रिका के कई देशो मे इस कुप्रथा को मान दिया गया था ।

इस ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हिन्दुस्तान की कारीगरी और दस्तकारी को नेसतानाबूत कर के रख दिया और सभी छोटे छोटे उध्योग धन्धों को चोपट कर दिया । भारत के लगभग सभी साधारण शिल्पकारो का सर्वनाश हो गया और लेन्काशायर तथा मेनचेस्टर के कल-कारखानो को भारत मे ऊँचा स्थान दिलाया गया जिस से किसान कंगाल हो गये, देश मे दुख, दरिद्रता और दास्तव छा गये ।

भारतीयों की इस दशा ने परदेश के कम्पनियों को एक अच्छा मौका दे दिया था हमारे हिन्दुस्तानियों को बाहर देश मे गुलाम के रूप मे खुलेआम बिकने के लिये । उन

दिनो जब अमेरिका मे हब्शी लोगो को आजादी मिली तो उपनिवेश के अंग्रेज किसानो की कमपनियों की बरबादी होने लगी क्योंकि उन दिनो फीजी जेसे देशो के आदिमनिवासी खेतों मे काम करने के लिये तैयार नही थे या लायक नही थे । फीजी जैसे उपनिवेशों के अंग्रेज किसानी कम्पनियां बरबाद होने लगी तब उन की दृष्टि पराधीन भारत पर पड़ी जहां विलायती और ईस्ट इंडिया कम्पनी की सत्ता चलती थी ।

उन को खरीदने वाले लोग बड़े चालाकी से उन्हे अपने मीठी मीठी बातों से बहका और फंसा कर बटोर लेते थे और कई ब्रिटिश सरकार के कोलोनी या उपनिवेशों में उन को ला फेंकते थे । किसमत उन की खराब थी जो इस जाल में वे बहका के फंसा लिये जाते थे पर परमात्मा के दया से जब उन्हे आज़ादी मिली तब उन की देश भक्ती, मेहनत और तरक्की देख कर आज दुनियां उन की बड़ाई कर रही है । भारत मे उन की गरीबी और अशिक्षित दशा से बहुत लाभ उठाया गया था ।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के तरह अस्ट्रेलिया की कम्पनी (सी यस आर) सीयासार ने कई किसम के चालाक आरकाठियों को इस काम के लिये चुना था । उत्तर प्रदेश में गांव के पोंगे पंड़ितो को पीली झुल्ल पहना कर उन से अनजान कच्ची उमर के प्रवासियों को धोखा से बहका कर भर्ती कराये जाते थे । ऐसे लोगों को इसलिये चुना गया था जिस से गरीब और गुमराह भारतीये लोग उन का आसानी से विशवास कर सके ।

इन आरकाठियों याने कंम्पनी के चालाक नियोक्ताओं का काम था कि वे हष्ट पुष्ट नवजवान हिन्दस्तानियों को चुन चुन कर जगह जगह पर बंदरगाहों के समीप डेपो में जमा करे और जहाजों में भर के उन्हे फीजी देश या अन्य जगहों में ला पटकें जिस से सीयासार या अन्य व्यापारिक कम्पनियों के गन्ने या अन्य तरह की खेती सदा लहराती रहे और मजदूर तथा उन के परिवार बेचारे जीवन भर बिलखते रोते रहें ।

विधी के विधान से ऐसा ही हुआ और हमारे पूर्वज इस गम्भीर सामाजिक और राजनीतिक तूफान के झपेट में पड़ कर बड़ी मुसीबतों का सामना करते हुये फीजी देश को आबाद किया । फीजी मे सीयासार के खेतों मे इन गुलामो को कड़े से कड़े काम करने पड़े और अगर किसी काम मे कुछ सुस्ती दिखाने या भूल चूक होने पर उन को हंटर की मार, पाशविक अत्याचार या बातों का जवाब लातों से दिया जाता था ।

यह गिरमिट की भयानक और दुखदायक प्रथा सन अठारह सौ उन्हत्तर में शुरु की गई थी और उन्नीस सौ बीस में खतम की गई थी । उन चालिस वर्षों में हिन्दुस्तानियों पर कितने जुर्म ढाये गये इस का अनुमान आज के कोई एक साधारण आदमी लगा ही नही सकता किऊंकि वे इतने दर्दनाक और दुखदाई थे । फिर भी हमारे वतन के शहीदों ने इन सब कठिन अे कठिन तकलीफों को सहन कर के अपने भावी सनतानों के लिये बलिदान दिया । इतना जानते हुये भी कुछ हमारे नये वर्ग के पढ़े लिखे विद्यार्थी गण कह रहे है की हम

अपने गिरमिट की कहानियों को बढ़ा चढ़ा कर बताते हैं कियोंकि अमेरिका के काले लोगों की गुलामी की दासतान फीजी के भारतीयों से और भी खराब थी । हम यहां तुलना नहीं कर रहे हैं पर एक जटिल सच्चाई की परदा फास कर रहे हैं ।

हम मानते हैं की काले अमेरिकनों पर भी बहुत जुर्म ढ़ाये गये थे पर हम अपने गिरमिटियों के दुखों और तकलीफों पर परदा तो नहीं डाल सकते हैं । जो उन पर बीता था उसे आजकल के छोकड़ों को क्या पता है कयोंकि जिस के पैर न पड़ी बेवाई वो कया जाने पीर पराई । जो झेल चुके थे वे अपनी अपनी दुख भरी कहानी अपने परिवार वालो को बता गये है । उन की कहानियों पर गलत टीका टिपनी करना तो हमारे लिये बहुत ही बेवकूफी होगी । अगर हम ऐसा करते है तब हम उन तमाम पीड़ित लाचार हिन्दुस्तानियों के प्रति अपना असम्मान दिखा रहे हैं ।

सरजू हमारे आजा थे जो बसती जिला के दुमरियागंज थाना के सेनदुरी गांव के रहने वाले थे। उस समय वे करीब तेरह या चौदह साल के नौजवान थे जो अपने पिता शंकर और दो भाईयों बिपत और रघुबर के साथ आम और अन्य फलों की खेती में जुटे रहते थे । आम और महुये के पेड़ उन के जमीन में लहरा रहे थे और सारा परिवार उन फलों को बेच कर अपना खाना खर्चा चलाते थे और अपने परिवार का निरवाह करते थे।

खेती छोटी और परिवार बड़ा यह सोच कर उन के पिता ने उन को पास के गांव के एक दोस्त अमरनाथ के बहुत बड़े जमीनदारी में नौकरी पर लगा दी थी। मेरे आजा को वहां रहने का प्रबन्ध भी हो गया था और वे अपने नये काम को तन और मन लगा कर करने लग गये थे।

आजा जी महीने में एक बार दो तीन दिनो की छुट्टी पर अपने घर जाया करते थे। इस बार आम के फलों का बहार था और जिस दिन उन को अपने घर जाना था

उस दिन जोरों की पुरबी हवा चली और कई गद्दर और पके आम जमीन पर गिरे पड़े थे । उन्हों ने उन में से कुछ फलों को चुन कर अपने बस्ते में रख लिया था और घर ले जाने को अपने सामान के साथ रख कर तैयार हो रहे थे कि उस पर अमरनाथ के सरदारों ने आम की चोरी करने का इलज़ाम लगाया । बात अमरनाथ तक पहुंच गई और मेरे दादा को दो चार कड़वी बातें भी सुननी पड़ी ।

उन के लाख सफाई देने पर भी अमरनाथ ने उन को काम से निकाल दिया और कहा की वह यह सब एक पत्र में मेरे दादा के पिता को बता देगा । मेरे आजा के पास धन दौलत तो थे नहीं पर स्वाभिमान तो था । उन को इस बेइज्जती को सहने की ताकत ही नहीं रही और ये सब कड़वी बाते दिल पर तीर सी लगी ।

तीर का घाव समय ले कर भर जाता है पर कडुये बात का घाव जीवन भर कष्ट देता है । मेरे आजा एक बड़े धार्मिक और संस्कारी परिवार का खास अंग थे और

इस कलंक को नहीं सह सके। अगर वह अपने घर गये तब पिता और अन्य परिवार के ताने सुनने पड़ेंगे इसीलिये फिलहाल वे अपने घर न जाने का निशचय कर के दूसरी नौकरी के तलाश में चल पड़े। आजा ने अपनी झोली झंढ़ा उठाया और वहां से चल पड़े। चलते चलते नौकरी की तलाश में वे काशीपुर पहुंचे।

अभी शहर में प्रवेश भी नहीं कर पाये थे कि एक धूर्त आरकाठी की नज़र उन पर पड़ गई। मेरे आजा के दुखी चेहरे को देख कर वह उन पर ऐसा लपका जैसे शिकारी कुत्ता भागते हुते सुवर पर झपटता है। इधर उधर की कुछ बातें करके वह आखिर पूछ बैठा, " कैसे हो दोस्त ? कोई काम खोज रहे हो ? "

" काम याने नौकरी ! अरे जनाब आप नेकी भी करना चाहते हैं और फिर पूछ पूछ। कैसी नौकरी है और कितना तलब मिलेगा ?" मेरे आजा ने बड़ी आतुरता से उस आरकाठी के तरफ देखते हुये पूछा।

बस अब क्या था मेरे आजा न जानते हुये भी उस के पंजे में फंसने वाले ही थे । आरकाठी अपनी खुशी छुपाते हुये हमर्ददी दिखाया और अपने जाल में फंसाने के लिये कहने लगा, “अजी दोस्त, यह कोई नौकरी है ! यह तो तुम्हारा भाग्य खोलने का रास्ता है । यह रास्ता तो थोड़े ही दिनों में आप जैसे नसीब वाले इनसान को धनवान, गुनवान और सुखी बना देगा ।”

उस की चिकनी चुपड़ी बाते सुन कर आजा जी ने खयाली पुलाव चखना शुरु कर दी थी पर वह आरकाठी कहता गया,“ मेरे यार आप ने सुना होगा की कलकत्ता से थोड़ी दूर पर समुद्र तट पर एक बड़ा ही सुन्दर और धनी प्रदेश है जिसे लोग रमनीक देश के नाम से जानते हैं । वहीं पर मेरा एक जान पहचान का धनी जमीनदार रहता है जिस के पास एक बहुत बड़ी खेती बारी है । उन्ही के घर और जमीनदारी के रखवाली करने वाला एक सुरक्षा करने वाला गार्ड़ चाहिये । अच्छे तलब के अलावे पहनने के लिये वर्दी, रहने के लिये एक घर और तीनो पहर के पके पकाये

भोजन मिलेंगे । हां पूरे बारह घण्टे का काम रहेगा जहां तुम्हारे कन्धे पर बन्दूक लटकेगी और तुम पूरे जायदाद के इर्द गिर्द चक्कर लगाते नज़र आओगे । ऐसी नौकरी और कहां मिल सकती है ? बस वहां चैन से काम करना और मौज से रहना । इस से अधिक और क्या चाहिये ? ”

उस की बातें सुन कर मेरे आजा के मन में घी के लड्डू फूटने लग गये थे और वे और कुछ नही सुनना चाहते थे । वे अपने सपने की दुनियां में घूमने लगे थे । वे अपने आप को एक पौशाक पहने हुये सिपाही को कन्धे पर बन्दूक लिये खेतों में घूमते और मार्च करते हुये अभी से देखने लग गये थे ।

आजा सोचने लगे की आज उन का भाग्य खुल गया है और भले दिन आने वाले हैं । इस से बढ़ के और क्या चाहिये बस वे एक शेखचिल्ली की तरह एक नये जिन्दगी की कल्पना कर रहे थे । वे उस आरकाठी को

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below